DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

आधुनिक काल

Part -4

LIVE 27-06-2024 09:00 AM

सुमित्रानन्दन पन्त

सुमित्रानन्दन पन्त हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक हैं। इनका जन्म कौसानी बागेश्वर में हुआ था।

इनके साहित्य यात्रा के तीन प्रमुख पड़ाव हैं-

छायावादी, समाजवादी, अरविन्द दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवादी।

पन्त परम्परावादी आलोचकों और प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी आलोचकों के सामने कभी नहीं झुके। उन्होंने अपनी कविताओं में पूर्णमान्यताओं को नकारा नहीं।

उन्होंने अपने ऊपर लगने वाले आरोपो को 'नम्र अवज्ञा' कविता के माध्यम से खारिज किया।

प्रमुख रचनाएँ

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य को विद्वानों ने चार चरणों में बाँटा है, जो निम्न हैं-

- छायावादी - उच्छवास (1920), ग्रंथि (1920), वीणा (1927), पल्लव (1928), गुंजन (1932)
- प्रगतिवादी – युगान्त (1936), युगवाणी (1939), ग्राम्या (1940),
- अन्तश्चेतनावादी – स्वर्ण किरण (1947), स्वर्णधूलि (1947), युगपथ (1949)

नवमानवतावादी—उत्तरा (1949), कला और बूढ़ा चाँद (1959), अतिमा (1955), लोकायतन (1964), चिदम्बरा (1968) गीतहंस, पौ फटने से पहले।

रचनाओं से सम्बन्धित अन्य तथ्य

सुमित्रानन्दन पन्त की प्रथम कविता 'गिरजे का घंटा' है।

सुमित्रानन्दन पन्त के 'पल्लव' काव्यग्रन्थ को 'प्रकृति की चित्रशाला' कहा गया है। इसी काव्यग्रन्थ ने पन्त जी को छायावादी कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया।

गुंजन को सुमित्रानन्दन पन्त का अन्तिम छायावादी काव्यग्रन्थ माना जाता है।

'युगान्त' में छायावादी प्रकृति का अन्त और प्रगतिवाद का उदय मिलता हैं।

'ग्रन्थि' एक विरहगीत है, जिसमें एक प्रणय गाथा के माध्यम से कवि ने अपनी बात कही है। इसमें पन्त जी का स्वच्छन्दतावादी वृत्ति की अभिव्यक्ति हुई है।

स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि, युगान्तर, उतरा, रजतशिखर, शिल्पी, अतिमा, सौवर्ण्य, वाणी ये सभी रचनाएँ आध्यात्मिक हैं और इन पर अरविन्द दर्शन का गहरा प्रभाव है।

पन्त जी का 'लोकायतन' महाकाव्य है। सात अध्यायों और अनेक सर्गों में विभाजित इस महाकाव्य में सामूहिक मुक्ति की बात उठाई गई हैं।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं।

आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें "आधुनिक मीरा" के नाम से भी जाना जाता है।

निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" कहा हैं,

महादेवी वर्मा ने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

इनका जन्म फर्रुखाबाद, संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध में हुआ था।

महादेवी वर्मा ने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया, जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही सम्भव मानी जाती थी।

इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी कविता में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगति की जैसी त्रिवेणी गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी वर्मा

के गीतों की वेदना, प्रणयानुभूति करुणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं।

आलोचकों का एक वर्ग है, जो यह मानकर चलते है कि महादेवी का काव्य नितान्त वैयक्तिक है। उनकी पीड़ा, वेदना, करुणा कृत्रिम और बनावटी है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक उनके काव्य को समष्टिपरक मानते हैं।

प्रमुख काव्य रचनाएँ

नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1935), सांध्यगीत (1986), यामा (1940), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (1960), प्रथम आयामा (1974), अग्निरेखा (1990)

उदयशंकर भट्ट

उदयशंकर भट्ट का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा नगर में अपने ननिहाल में 3 अगस्त, 1898 को हुआ था।

प्रमुख काव्य रचनाएँ

तक्षशिला, राका, मानसी, विसर्जन, अमृत और विष, इत्यादि, युगदीप, यथार्थ और कल्पना, विजयपथ, अन्तदर्शन, तीन चित्र, मुझमें जो शेष है, आदि।

मोहन लाल महतो वियोगी

मोहनलाल महतो वियोगी ने अपनी प्रखर प्रतिभा से हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को निष्ठापूर्वक समृद्ध किया। वियोगी जी का काव्य राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है।

प्रमुख रचनाएँ

निर्माल्य (1926), एक तारा, कल्पना (1935)

मुकुटधर पाण्डेय

मुकुटधर पाण्डेय छायावाद के जनक माने जाते हैं। इनका जन्म छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के एक छोटे से गाँव बालपुर में हुआ था।

मुकुटधर पाण्डेय देश की सभी प्रमुख पत्रिकाओं में लगातार लिखते हुए हिन्दी पद्य के साथ-साथ हिन्दी गद्य के विकास में भी अपना अहम योगदान दिया।

प्रमुख रचनाएँ

पूजाफूल, शैलबाला, लच्छमा (उपन्यास), परिश्रम (निबन्ध), हृदयदान, मामा, छायावाद एवं अन्य निबन्ध।

लक्ष्मीनारायण मिश्र

रचना - अन्तर्जगत् (1924)

जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' हिन्दी कवि, कथाकार तथा शिक्षक थे। ये कहानी लेखकों की अगली पंक्ति में थे व इनकी गणना हिन्दी के छायावाद काल के भावुक कवियों में की जाती है।

काव्य रचनाएँ

अनुभूति, अन्तर्ध्वअन्तर्ध्वनि, असंगृहीत, स्फुट रचनाएँ।

आरसी प्रसाद सिंह

मैथिली और हिन्दी के प्रसिद्ध कवि आरसी प्रसाद सिंह रूप, यौवन और प्रेम के कवि के रूप में विख्यात थे।

प्रमुख रचनाएँ

कलापी (1938), संचयिता (1942), जीवन और यौवन (1944), नई दिशा (1944), पांचजन्य (1945), प्रेमगीत (1954) सूर्यमुखी (मैथिली काव्य संग्रह), माटिक दिप।

माखनलाल चतुर्वेदी

माखनलाल चतुर्वेदी का रचनाकर्म उस समय का था जब लोकमान्य तिलक ने **"स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"** की उद्घोषणा की थी।

चतुर्वेदी जी के रचना के तीन आयाम हैं-

पहला-पत्रकारिता-प्रभा, कर्मवीर और प्रताप का सम्पादन दूसरा माखनलाल जी की कविताएँ, निबन्ध, नाटक और कहानी, तीसरा माखनलाल जी के अभिभाषण व्याख्यान।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

हिमकिरीटिनी (1943),

हिमतरंगिनी (1949), → साहित्य अकादमी पुरस्कार - 1955

माता (1951),

समर्पण (1959),

युग चरण (1956),

मरण ज्वार (1963),

वेणुलो गूंजे धरा (1960)

बालकृष्ण शर्मा नवीन

बालकृष्ण शर्मा नवीन परम्परा और समकालीनता के कवि है। उनकी कविता में स्वच्छन्दतावादी धारा के प्रतिनिधि स्वर के साथ-साथ राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना, गाँधी दर्शन और संवेदनाओं की झंकृतियाँ समान ऊर्जा और उठान के साथ सुनी जा सकती हैं।

इन्होंने ब्रजभाषा युक्त खड़ी बोली में काव्य की रचना की।

प्रमुख काव्य रचनाएँ : कुंकुम (1939), रश्मिरेखा, अपलक, क्वासी, हम विषपायी जनम के, विनोबा स्तवन, उर्मिला।

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवियित्री थी। वातावरण चित्रण-प्रधान शैली की, भाषा सरल तथा काव्यात्मक है। इस कारण इनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है।

प्रमुख रचनाएँ : त्रिधारा, मुकुल (1931)

प्रसिद्ध कविताएँ

झाँसी की रानी, झण्डे की इज्जत में, स्वदेश के प्रति, जलियाँवाला बाग।

सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रथम रचना वर्ष 1915 में प्रयाग की 'मर्यादा' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी।

सुभ्रदा कुमारी चौहान का काव्य संग्रह 'मुकुल' वर्ष 1930 में प्रकाशित हुआ था। इस पर वर्ष 1931 में इन्हें साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से 'सेक्सरिया पुरस्कार' प्राप्त हुआ था।

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ वीर रस के कवि के रूप में स्थापित है।

रचनाओं से सम्बन्धित तथ्य

दिनकर स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रकवि के नाम से जाने गए। एक ओर इनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आगोश और क्रान्ति की पुकार है, तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

बारदोली विजय सन्देश (1928), प्राणभंग (1929), रेणुका (1935), हुंकार (1938), रसवन्ती (1939), द्वंद्वगीत (1940), कुरुक्षेत्र (1946) धूप छाँव (1947), सामधेनी (1947), बापू (1947), इतिहास के आँसू

(1951), धूप और धुआँ (1951), मिर्च का मजा (1951), रश्मिरथी (1952), दिल्ली (1954), नीम के पत्ते (1954), नील कुसुम (1955), सूरज का ब्याह (1955), चक्रवाल (1956), कवि श्री (1957), सीपी और शंख (1957), नए सुभाषित (1957), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), आत्मा की आँखे (1964), कोयल और कवित्व (1964), मृति तिलक (1964), हारे को हरिनाम (1970), संचयिता (1973), रश्मिलोक (1974)।

रचनाओं से सम्बन्धित तथ्य

- 'दिनकर' की 'रेणुका' और 'हुंकार' पराधीनता-काल की रचनाएँ हैं। इन रचनाओं को सरकार ने आपत्तिजनक मानकर 'दिनकर' से स्पष्टीकरण माँगा था।
- दिनकर कृत 'रसवन्ती' में यौवन, सौन्दर्य और विरह व्यथा के गीत हैं। दिनकर कृत 'बुद्धदेव', कलातीर्थ', 'कलिंग-विजय' कविताएँ सांस्कृतिक सन्देश की वाहिका हैं।
- दिनकर जी का 'कुरुक्षेत्र' श्रेष्ठ प्रबन्धकाव्य है। यह महाभारत के शान्तिपर्व से प्रभावित है।

- 'कुरुक्षेत्र' मनुष्य की आधारभूत समस्याओं का विवेचन करने वाला एक उत्कृष्ट चिन्तन प्रधान काव्य है।
- 'उर्वशी' दिनकर जी का पाँच अंकों में विभाजित एक काव्य-रूपक है। इसका केन्द्रीय भाव 'प्रेम' है। इसमें 'पुरुरवा' और 'उर्वशी' के प्रेम का चित्रण है।
- 'रश्मिरथी' का नायक कर्ण है, जिसके माध्यम से सम सामयिक प्रश्नों को उठाया गया है।
- दिनकर कृत 'परशुराम की प्रतीक्षा' भारत-चीन युद्ध को आधार लेकर लिखा गया है।

- ❖ रामधारी सिंह 'दिनकर' 'अनल कवि' नाम से सुविख्यात हैं।

जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द

- ❖ जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द' हिन्दी के कवि एवं नाटककार थे। इनका जन्म ग्वालियर के मुरार में हुआ था।
- ❖ **काव्य रचनाएँ :** अन्तिमा, पूर्णा, बलिपथ के गीत, नवयुग के गान और मुक्तिस्वर।

❖ भगवती चरण वर्मा

❖ भगवती चरण वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के शफीपुर गाँव में हुआ था। प्रारम्भ में इन्होंने कविता लिखी फिर उपन्यास लिखने लगे।

❖ **काव्य रचनाएँ :** मधुकण (1932), प्रेमसंगीत (1937), मानव (1940), रंगों से मोह (1962) ।